प्रेरणा.....

बीकानेर मंडल पर रेलवे की मैकेनाइज्ड लाँड्री का शुभारंभ हो चुका था। अब तक की यह आधुनिकत्तम लाँड्री थी। सभी उसे बधाई दे रहे थे। इतनी कम मैन पावर में इतना बढ़िया आउटपुट सभी उसे प्रशंसा की दृष्टि से देख रहे थे। अनायास ही वह खयालों में खो गया कि किस तरह पिछले एक साल से वह लगातार इस काम में रात-दिन लगा हुआ था सभी विभागों के अधिकारियों ने उसका सहयोग किया था, खास कर अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री जीत सिंह ने...। न जाने कितने ही दिन वे दोनों इसकी योजना बनाते बनाते 10 बजे तक आफिस में बैठे रहते थे।

अचानक किसी ने उसे आवाज दी ... ' बालाजी '.. उसकी विचार तंद्रा भंग हुई। जी सर, उसने कहा... देखा कि मुख्य यांत्रिक इंजीनियर बुला रहे हैं।

'वेल डन बालाजी.... अब तुम कुछ इनोवेशन करो ताकि इसकी लागत कम हो' कह कर वहां से निकल गए।

उसने सोचा कि ये उच्चाधिकारी जाने किस मिट्टी के बने होते हैं कितना भी बढिया काम करो... कभी संतुष्ट नहीं होते.....।

खैर.....वक्त निकलता गया। एक दिन छोटे से स्टेशन पर निरीक्षण के दौरान उसने एक प्याउ देखी... प्याउ का बेकार पानी एक प्लास्टिक की नली से होता हुआ पौधों के उपर बूंद-बूद गिर रहा था..... और पौधे हरे-भरे थे। उसके पूछने पर प्याउ वाले ने कहा कि 'साहब यहां रेगिस्तान में पानी की काफी कमी है और पेड़ों की भी। इससे बेकार पानी काम आ जाता है और पेड़ों को पानी देने के लिए किसी आदमी की जरूरत भी नहीं पड़ती। उसने मन ही मन कहा बेस्ट यूटीलाईजेशन ऑफ रिसार्सेज एंड एन्वायरमेंट फ्रेंडली...। इससे अचानक एक विचार उसके दिमाग में आया और बीकानेर पहुंचते ही वह लाँड्री में गया देखा.... विचारा और तैयार होकर ऑफिस आ गया। उसके दिमाग में आइडिया आया। उसने सबसे पहले अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री जीत सिंह को बताया कि लाँड्री के बायलर व अन्य भागों से निकलने वाली भाप/पानी को यदि एक स्थान पर एकत्र कर लिया जाए तथा उसे वापिस बायलर में भेज दिया जाए तो ..इससे कई लाभ होंगे.....

1 यह पानी साफ्ट होगा अत: पानी साफ्ट करने में लगने वाली उर्जा की बचत होगी।

2 यह पानी लगभग 60-70 डिग्री गर्म होगा अत: बायलर को पानी ज्यादा गर्म नहीं करना पड़ेगा इससे डीजल की बचत होगी।

3 पानी की बचत होगी और पर्यावरण का फायदा होगा।

और फिर उसने पानी एकत्र करने के टैंक बनवाकर उस पानी को वापिस बायलर में पंप करना शुरू किया और आज इस इनोवेशन से प्रतिदिन लगभग 50 लीटर डीजल की बचत हो रही है तथा प्रतिदिन आवश्यकता के आधे (2000 लीटर) पानी की बचत हो रही है।

अनिल कुमार शर्मा,
राजभाषा अधिकारी,
उ.प.रे. बीकानेर.